पृथिव्यानि यानि तीर्थानि, तानि सर्वाणि नैमिषे।।

एकदा नैमिषारण्ये, ऋषयः शौनकादयः। पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे, सूतं पौराणिकं खलु।।

प्रेरणा एवं आशीर्वाद
ब्रह्मलीन श्रीमती सरोज देवी
धर्मपत्नी श्री व्यास पीठाधीश

ऋषि सन्देश

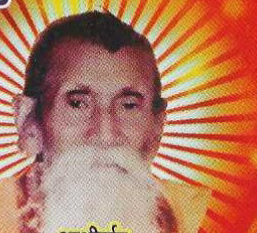

आशीर्वाद
ब्रह्मलीन महन्त श्री हरि गोविन्द दीक्षित
पिता श्री व्यास पीठाधीश

अखिल विश्व के कल्याण एवं पितरों को मोक्ष प्रदान कर मानव की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने हेतु 88000 ऋषि मुनियों व 33 कोटि देवताओं की पावन तपोभूमि नाभिगया नैमिषारण्य क्षेत्र जिला-सीतापुर (उ0प्र0) भारतवर्ष में 88 हजार श्रेष्ठ आचार्यों व यजमानों के साथ अलौकिक दिव्य विभूतियों के सान्निध्य में

लगभग 1 अरब 97 करोड़ 29 लाख 49 हजार वर्षों के बाद

जन कल्याण हेतु आयोजित

88 हजार श्रीमद्भागवत पारायण महायज्ञ

तथा कलियुग का एक महान सप्तम् ऋषि-सत्र

प्रारम्भ तिथि :
25 अक्टूबर 2025

समापन तिथि :
3 नवम्बर 2025

श्री वेद व्यास धाम

श्री वेद व्यास धाम

महायज्ञ संकल्पी एवं मुख्य कथा व्यास

श्री व्यास पीठाधीश अनिल कुमार शास्त्री

श्री नैमिषारण्य क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

विश्व के अनेक सुप्रसिद्ध तीर्थों में से है सतयुग का एक महान प्राचीन तीर्थ नैमिषारण्य क्षेत्र। इस क्षेत्र की स्थापना सृष्टि के प्रारम्भ में स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने की थी, स्वायंभु मन्वन्तर के अन्तर्गत युगों की श्रृंखला में सर्वप्रथम सतयुग और तीर्थों में सर्वप्रथम श्री नैमिषारण्य क्षेत्र का निर्माण किया गया था, विश्व के आठ आरण्यों में अष्टम आरण्य तथा आठ बैकुण्ठों में अष्टम बैकुण्ठ श्री नैमिषारण्य क्षेत्र माना जाता है, पुरातन काल में जब मानव पर कोई विपत्ति आती थी या राष्ट्रों पर कोई विचार विनिमय करना होता था, तब इसी भूमि पर ऋषि एकत्रित होकर धर्म संसद चलाकर राष्ट्रों का निर्णय किया करते थे। 88000 ऋषि-मुनियों की राजधानी एवं भारतीय सनातन संस्कृति का उद्गम स्थल श्री नैमिषारण्य क्षेत्र अनादिकाल से ऋषि-मुनियों की तपस्या का केन्द्र रहा है, श्रीमद् भागवत से लेकर वर्तमान में श्री रामचरितमानस की उत्पत्ति के काल तक प्रत्येक प्राचीन ग्रन्थों में श्री नैमिषारण्य क्षेत्र का वर्णन आता है। मानव सृष्टि के रचयिता श्री स्वायंभू मनु और सतरूपा ने यहीं पर 23 हजार वर्षो तक घोर तपस्या करके निराकर ब्रह्म को पुत्र रूप में प्राप्त कर लिया था। भगवान श्री वेदव्यास जी ने इसी धरती पर चार वेद, छः शास्त्र, तथा अठारह पुराणों की रचना करके अक्षय वट की छाया में अपने परम शिष्य महर्षि जैमिनि को सामवेद की शिक्षा दी थी तथा कलयुग में प्रत्येक मानव के कल्याण का सबसे सरल साधन श्री सत्य नारायण व्रत कथा का माहात्म्य एवं पूजा का विधान बताया था। नैमिषारण्य में ही महर्षि दधीचि ने लोक कल्याण हेतु अपनी अस्थियों का भी दान दे दिया था। महर्षि सूत जी ने यहीं पर द्वादश वर्षीय दीर्घकालीन ऋषि-सत्र एवं श्रीमद्भागवत पारायण का शुभारम्भ किया था। महर्षि वेद व्यास, महर्षि शौनक की तपस्थली एवं उनकी नौं कुण्डीय अष्टकोणीय प्राचीन यज्ञशाला इसी नैमिषारण्य में स्थित है। वह स्थान आज भी श्री वेद व्यास धाम के रूप में प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है। श्रीमदभागवत सप्तम स्कन्ध के चौदवें अध्याय में नैमिषारण्य को श्रेष्ठ कुलाचल माना है। यह हरि चर्चा एवं यागादिकों के लिए उत्तम स्थान माना गया है। यहाँ पर किया गया धर्म पुण्य,दान एवं तपस्या का फल सहस्त्र गुणा होकर दानदाता को प्राप्त होता है। इसलिए त्रेतायुग में भगवान श्री राम ने भी अपनी जन्मभूमि अयोध्या को छोड़कर इस नैमिषारण्य में ही दशाश्वमेघ याग किया था। जब स्वर्ग लोक में देवगणों के पुण्य क्षीण होने लगते थे, तब इसी पवित्र भूमि पर तप,दान,यज्ञादि करके अपने को पुनः देवगण शक्ति को प्राप्त कर संसार का कल्याण करते थे। गर्ग सहिंता में नैमिषारण्य को प्रत्येक तीर्थो से दस गुना अधिक गरिमामयी बतलाया गया है। यहाँ पर श्रीमद भागवत पारायण एवं गोदान, अन्नदान एवं वृक्ष दान आदि दान करने से चार गुना अधिक फल दानदाता को प्राप्त होता है। इस भूमि पर 33 कोटि देवता, साढ़े तीन करोड़ तीर्थ तथा 88000 ऋषि नित्य निवास करते हैं। ऐसे महान नैमिषारण्य क्षेत्र की महिमा का गुणगान स्वयं शेषनाग भी नही कर सकते, इसका वर्णन अवर्णनीय है।

विनम्र निवेदन

मानव की समस्त कामनाओं को पूर्ण कर पितरों को मोक्ष प्रदान करने वाला यह 88000 श्रीमद भागवत पारायण महायज्ञ एवं सप्तम् ऋषि-सत्र दिनाँक- 25.10.2025 से 3.11.2025 तक नाभिगया नैमिषारण्य क्षेत्र जिला सीतापुर उ0प्र0 भारत वर्ष में जनकल्याण हेतु आयोजित किया जा रहा है। इस महायज्ञ में हर्ष, उल्लास और उमंग युक्त जीवन जीने व यज्ञ एवं दान करने की पवित्र भावना तथा अतृप्त पितरों को श्राद्ध तर्पण द्वारा तृप्त करने एवं श्रीमद भागवत पारायण श्रवण कराकर मोक्ष प्रदान करने व अपने पूर्वजों से अपने सौभाग्य एवं अपनी संतति की रक्षा तथा संवर्धन का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये अनेकों तपस्वी, ऋषि-मुनियों, सन्त महात्माओं एवं अनेकों धर्माचार्यो के साथ-साथ सनातन धर्म एवं वैदिक धर्म आस्था रखने वाले देश-विदेशों से लगभग 5 लाख श्रद्धालुओं से भी अधिक श्रद्धालुओं के उपस्थित होने की संभावना है। इस महायज्ञ में श्रद्धालुओं के लिये 10 प्रकार के यजमानों के पद सुनिश्चित किये गए हैं। जिसमें कोई भी श्रद्धालुगण उपरोक्त महायज्ञ में किसी भी प्रकार के यजमानों का पद ग्रहण करके स्वयं अपने हाथों से पितरों एवं पूर्वजों को मोक्ष प्रदान कर पुण्य प्राप्त सकते हैं।

1. प्रधान यजमान महायज्ञ
2. प्रधान यजमान ऋषि-सत्र
3. मुख्य यजमान महायज्ञ
4. मुख्य यजमान ऋषि-सत्र
5. अति विशिष्ट यजमान महायज्ञ
6. अति विशिष्ट यजमान ऋषि-सत्र

(उपरोक्त यजमानों के पद श्री व्यासपीठाधीश जी की स्वीकृति से ही निर्धारित किये जायेंगे।)

7. विशिष्ट यजमान महायज्ञ
8. विशिष्ट यजमान ऋषि-सत्र
9. वरिष्ठ यजमान महायज्ञ
10. साधारण यजमान महायज्ञ।

कोई भी श्रद्धालुगण उपरोक्त यजमानों के पद अपनी श्रद्धा के अनुसार संकल्पित कर सकते हैं। इन पदों में दान दी गई, दानराशि का उपयोग केवल भागवत पूजन, भागवत पाठ, आचार्य की दक्षिणा, आचार्यो के आवास, आचार्य के भोजन एवं सम्पूर्ण भागवत के (श्लोक) मंत्रों के द्वारा यज्ञशाला में प्रतिदिन आहुति की जाने वाली यज्ञ सामग्री आदि के रूप में व्यय किया जायेगा। इसमें यजमान से सम्बन्धित किसी भी प्रकार का व्यय सम्मिलित नहीं है।

विशिष्ट यजमान महायज्ञ : कोई भी ऐसे श्रद्धालु जो अपने 7 मातृपक्ष के, 7 पितृपक्ष के व 7 श्वसुर पक्ष के, कुल 21 पीढ़ियों का उद्धार करना चाहें वह सात भागवत मातृपक्ष के नाम से, सात भागवत पितृपक्ष के नाम से व सात भागवत श्वसुर पक्ष के नाम से संकल्पित करके 7+7+7=21 पीढ़ियों को मोक्ष प्रदान करने के लिये इक्कीस भागवत पोथी के यजमानों का दायित्व ग्रहण करने वाले श्रद्धालु अपना नाम, पिता का नाम, पूरा पता व गोत्र लिखकर भागवत पाठ एवं मन्दिर निर्माण हेतु आंशिक दान, कुल मिलाकर 11,01,151 रू0 दान राशि निम्नलिखित समिति के नाम भेज कर **विशिष्ट यजमान महायज्ञ** का पद ग्रहण करके पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। (श्रीमद् भागवत् कथा के मध्य दिये जाने वाले आवश्यक दान :- अपने श्रद्धा के अनुसार वंश वृद्धि एवं वंश संरक्षण हेतु आम के वृक्षों का दान, वैतरणी नदी पार करने हेतु गोदान, पितरों की उदरपूर्ति करने हेतु प्रति दिन ब्राह्मणों को भोजन,जल सेवा तथा इसके अतिरिक्त कोई भी ऐसा दान जो यजमान को प्रिय हो संकल्पित कर सकता है।)

वरिष्ठ यजमान महायज्ञ : कोई भी ऐसे श्रद्धालु जो अपने 1 मातृपक्ष के, 1 पितृपक्ष के व 1 श्वसुर पक्ष के, कुल 3 पीढ़ियों का उद्धार करना चाहें वह एक भागवत मातृपक्ष के नाम से, एक भागवत पितृपक्ष के नाम से व एक भागवत श्वसुर पक्ष के नाम से संकल्पित करके 1+1+1=3 पीढ़ियों को मोक्ष प्रदान करने के लिये तीन भागवत पोथी के यजमानों का दायित्व ग्रहण करने वाले श्रद्धालु अपना नाम, पिता का नाम, पूरा पता व गोत्र लिखकर तीन भागवत पाठ एवं मन्दिर निर्माण हेतु आंशिक दान, कुल मिलाकर 1,58,453 रू0 दान राशि प्रदान कर **वरिष्ठ यजमान महायज्ञ** का पद ग्रहण करके पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। (श्रीमद् भागवत् कथा के मध्य दिये जाने वाले आवश्यक दान :- अपने श्रद्धा के अनुसार वंश वृद्धि एवं संरक्षण हेतु आम के वृक्षों का दान, वैतरणी नदी पार करने हेतु गोदान, पितरों की उदरपूर्ति करने हेतु प्रति दिन ब्राह्मणों को भोजन, जल सेवा तथा इसके अतिरिक्त कोई भी ऐसा दान जो यजमान को प्रिय हो संकल्पित कर सकता है।)

साधारण यजमान महायज्ञ : जनकल्याण हेतु आयोजित इस महापर्व पर कोई भी श्रद्धालु, अपने या अपने पितरों के कल्याणार्थ भागवत पाठ कराने हेतु साधारण यजमान बनना चाहे या किसी को यजमान बनाना चाहे वह यजमान का नाम, पिता का नाम, पूरा पता व गोत्र लिखकर प्रति यजमान 51,151 रू0 दान राशि निम्नलिखित समिति के नाम भेज कर **साधारण यजमान महायज्ञ** का पद ग्रहण करके पुण्य प्राप्त कर सकते हैं। (श्रीमद् भागवत् कथा के मध्य दिये जाने वाले आवश्यक दान :- अपने श्रद्धा के अनुसार वंश वृद्धि एवं वंश संरक्षण हेतु आम के वृक्ष का दान, वैतरणी नदी पार करने हेतु गोदान, पितरों की उदरपूर्ति करने हेतु प्रति दिन ब्राह्मण भोजन, जल सेवा तथा इसके अतिरिक्त कोई भी ऐसा दान जो यजमान को प्रिय हो संकल्पित कर सकता है।)

इसके अतिरिक्त कोई भी दान दाता व धर्म सेवी संस्थाएँ अन्न क्षेत्र चलाना चाहें या अन्य कोई उपयोगी सामग्री वस्तु अथवा धनराशि के रूप में भेंट करना चाहें वह अपनी संकल्पित दानराशि पूर्ण विवरण के साथ रजि0 डाक द्वारा निम्नलिखित समिति के नाम भेज सकते हैं "श्री पुष्टिमार्गीय बल्लभ सत्संग समिति" नीमसार (इण्डियन बैंक, नीमसार AC.NO. 21037415485, IFSC Code: IDIB000M714) या (स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया नीमसार जिला-सीतापुर उ0प्र0 AC.NO. 32419454272, IFSC Code: SBIN0014929) अथवा एक्सिस बैंक जिला-सीतापुर उ0प्र0 AC.NO. 542010100020846, IFSC Code: UTIBOOOO542) में सीधे अथवा बैंक ट्रान्सफर द्वारा जमा कराकर, जमा रसीद की छाया प्रति, अपना नाम, अपने पिता का नाम, अपना गोत्र, पत्र व्यवहार का पूर्ण पता, स्थान, जिला, राज्य, देश व मोबाइल नं. के साथ लिखकर निम्नलिखित समिति के नाम भेज सकते हैं, या कोई भी श्रद्धालु किसी भी प्रकार की महायज्ञ सम्बन्धी कोई भी जानकरी प्राप्त करना चाहें वह उपरोक्त प्रधान कार्यालय में निम्नलिखित नम्बरों पर सम्पर्क कर सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पुराणों के अनुसार नैमिषारण्य क्षेत्र में किसी भी प्रकार का किया हुआ दान चार गुना अधिक फल प्रदान करता है, अतः नैमिषारण्य क्षेत्र में अपने एवं अपने पितरों के हेतु विधि विधान पूर्वक श्रीमद्भागवत पारायण कराने तथा उसमें दिये गये किसी भी दान के प्रभाव से पितृगण प्रेत योनि से मुक्त होकर देव योनि धारण कर दुंदभी बजाते हुए बैकुण्ठ में वास कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं, उसके प्रभाव से उनके पुत्र-पौत्रादि पित्र दोष से मुक्त हो कर धन-धान्य से पूरित होते हुए परम कल्याण को प्राप्त होते हैं। आपके द्वारा श्रद्धापूर्वक दिया हुआ सूक्ष्म से सूक्ष्म दान भी इस महायज्ञ को नव चेतना व स्फूर्ति प्रदान करेगा, आपका आगमन व सहयोग प्रार्थनीय है।

तुलसी पक्षिन के पिये, घटे न सरिता नीर। धर्म किये धन ना घटे, जो सहाय रघुवीर।।

महायज्ञ में श्रद्धापूर्वक दिये जाने वाले दान एवं उनका फल

1. महायज्ञ में प्रधान यजमान बनने से सभी पितरों को मोक्ष प्राप्त हो जाता है। तथा यजमान को यश, प्रतिष्ठा एवं लक्ष्मी की वृद्धि के साथ-साथ सर्वसुखों की प्राप्ति होती है।

2. महायज्ञ में मुख्य यजमान बनने से सभी देवगण प्रसन्न होकर यजमान के द्वारा किये गये संकल्प को पूर्ण करके, यजमान को निरोग्यता तथा द्रव्य से परिपूरित रखते हैं।

3. महायज्ञ में अति विशिष्ट यजमान बनकर कथा श्रवण करने से पुण्यलोकों की प्राप्ति के साथ-साथ यजमान को इस लोक में धन-धान्य की वृद्धि एवं सन्तान का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

4. महायज्ञ में अति विशिष्ट यजमान, विशिष्ट यजमान अथवा अन्य किसी भी प्रकार के यजमान का पद ग्रहण कर कथा श्रवण करते हुए निम्नलिखित किसी भी प्रकार के दिये हुए दान के कारण श्रद्धालुओं के पितृगण प्रसन्न होकर दुंदभी बजाते हुए भगवान के परम धाम वैकुण्ठ में वास करते हैं। तथा यजमान सभी आधिभौतिक व आधिदैहिक रोगों से मुक्त होकर स्वस्थ काया, निरोगी जीवन प्राप्त कर सभी सुखों से लाभान्वित होता है।

5. महायज्ञ में एक भण्डारे की एक समय की भोजन प्रसादी :- 1,00,001 रू0
अन्नदान देने से घर में दरिद्रता का वास नहीं होता।

6. महायज्ञ में एक भण्डारे की एक समय की फलाहारी सेवा :- 51,000 रू0
फलाहारी सेवा करने से उच्च कुल में जन्म की प्राप्ति होती है।

श्री पुष्टिमार्गीय बल्लभ सत्संग समिति
QR कोड

7. महायज्ञ में एक समय की चाय सेवा :- 21,000 रू0
दुग्ध और चाय आदि का दान करने से सम्पन्नता बढ़ती है।

8. महायज्ञ में एक दिन की शुद्ध पेय जल सेवा :- 31,000 रू0
नैमिषारण्य में जल दान करने से पितरों को तृप्ति होती है।

9. महायज्ञ में प्रतिदिन आरती के पश्चात प्रसाद वितरण :- 25,000 रू0
प्रसाद वितरण करने से प्राणी भूखा या बीमार नहीं होता।

10. महायज्ञ में फल वितरण सेवा हेतु (एक समय) :- 11000 रू0
फल दान करने से सामान्य पुण्य का फल भी चार गुना हो जाता है।

11. महायज्ञ में भोजन के पश्चात् दक्षिणा सेवा (प्रति सन्त) :- 101 रू0
साधु-सन्तों एवं ऋषि-मुनियों को दक्षिणा प्रदान करने से कभी द्रव्य का अभाव नहीं होता।

12.महायज्ञ में साधु-सन्तों एवं आचार्यो को कम्बल, आसन एवं पीली लोई आदि आवश्यक वस्त्र सेवा प्रदान करने हेतु (प्रति सन्त) :- 1100 रू0
साधु-सन्तों को वस्त्र दान करने से अकाल मृत्यु नहीं होती।

13.महायज्ञ में गरीब, असहाय, वृद्ध, दिव्यांग आदि की सेवा हेतु :- 51,000 रू0
उपरोक्त समुदाय की सेवा साधक को परिक्रमा करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है।

14. महायज्ञ में वेदोक्त गोदान करने हेतु :- 1,51,000 रू0
महायज्ञ में गाय के भोजन और बैठने की भूमि के साथ गोदान करने से सहस्त्र गुणा अधिक फल प्राप्त होने के साथ-साथ वैतरणी नदी को पार करने में सहायता प्राप्त होती है।

15. महायज्ञ में सामान्य गोदान सेवा हेतु :- 21,000 रू0
नैमिषारण्य में एक वर्ष तक चारे के साथ सामान्य गोदान करने से श्री कृष्ण के चरणों में प्रीति एवं सभी ऐश्वर्यों की प्राप्ति होती है।

16. महायज्ञ में गो के भोजन हेतु आवश्यक चारे का दान :- श्रद्धानुसार
चारे के दान करने से सभी देवता तृप्त एवं सभी पुण्य अक्षय हो जाते है।

17. महायज्ञ में आम के वृक्ष का दान प्रति वृक्ष :- 2500 रू0
आम के वृक्ष के दान करने से देवताओं के द्वारा वंश संरक्षण एवं वंश की वृद्धि होती है।

18. नैमिषारण्य नाभिगया में पितरों के उदरपूर्ति हेतु पिण्डदान :- 5101 रू.
यहाँ पर पिण्डदान करने से पितरों का पेट भरता है, और पितृगण आनन्दित होकर कभी भूखे न रहने का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

19. नाभिगया में पितरों को शय्या प्रदान करने हेतु शय्यादान :- 11001 रू. प्रति शय्या
नैमिष में शय्यादान करने से पितरों को स्वर्ग की एवं दानादाता को विष्णुलोक की प्राप्ति होती है।

20. नैमिषारण्य में सभी दानों में महादान भूमिदान प्रति बीघा अनुमानित :- 5,00,000 रू.
नैमिषारण्य में भूमिदान करने से सौ यज्ञों के बराबर पुण्य प्राप्त होता है।

21. श्रीमद्भागवत ग्रन्थ (संस्कृत या हिन्दी प्रति) 150 संस्कृत प्रति, 501 हिन्दी प्रति
नैमिषारण्य में श्रीमदभागवत ग्रन्थ का दान करने से पितृगण हर्षित होकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

22. श्री राधाकृष्ण मन्दिर का नवनिर्माण (कथामंडप के साथ)
नैमिषारण्य में मन्दिर का निर्माण एवं सहयोग करने से भगवान की भक्ति सहज ही प्राप्त होती है, मन्दिर निर्माण करने से प्राणी को ब्रम्हलोक की प्राप्ति होती है।

23. वेद व्यास धर्मशाला (प्रस्तावित तीन सौ कमरे बरामदा व आवश्यक सुविधाओं सहित)

टाइप-ए : 15 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा	टाइप-बी : 11 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा
टाइप-सी : 13 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा	टाइप-डी : 25 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा
टाइप-ई : 21 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा	टाइप-एफ : 22 लाख 51 हजार रू. प्रति कमरा

नैमिषारण्य में भवन दान करने से परमात्मा के भुवन में पितरों को दिव्य भवनों की प्राप्ति होती है, उस दान के पुण्य से दानदाता एवं उसके पुत्र पौत्रादिकों को सदैव सुन्दर भवनों का सुख प्राप्त होता रहता है।

इस महायज्ञ में उपरोक्त सभी दिये हुए दान की राशि साधु-संतों, ऋषि-मुनियों एवं श्रद्धालुओं की सेवा में व्यय की जायेगी। महायज्ञ का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त किसी भी प्रकार के दान को रेखांकित करना आवश्यक है। कृपया उदारता पूर्वक अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर पुण्य व यश के भागी बनें।

प्रगट चारि पद धर्म के तिन्ह महु एक प्रधान। येन केन विधि कीन्हें दान किये कल्याण।।

आवश्यक निवेदन

आप अपने मित्रों एवं परिवार के साथ कितने सदस्य आयेंगे इसका सम्पूर्ण विवरण आधार कार्ड की छायाप्रति के साथ, हमें 30 सितम्बर 2025 तक प्राप्त हो जाने चाहिये। जिससे संस्था को पूर्ण व्यवस्था करने का पर्याप्त समय प्राप्त हो सके। आपके आकस्मिक आगमन पर आपकी आवासीय व्यवस्था तत्काल प्राप्त न होने पर समिति उत्तरदायी नहीं होगी। आप अपने साथ बिस्तर, ओढ़ने के लिए कम्बल, तर्पण एवं श्राद्ध आदि के लिए लोटा व थाली एवं अति आवश्यक उपयोगी वस्तुयें साथ लायें तथा सोने, चाँदी आदि के आभूषण व कीमती सामान न लायें अन्यथा इसकी सुरक्षा की पूर्ण जिम्मेदारी स्वयं आप पर होगी। आने वाले यात्रियों से अनुरोध है, कि अपने गन्तव्य का वापसी आरक्षण करा लें, अपने आने व वापस जाने की तिथि की जानकारी संस्था को अवश्य प्रदान करें। सभी श्रद्धालु पीत वस्त्र धारण करके संकल्प शक्ति को पूर्ण करने वाले भगवान नारायण के समक्ष पितृ श्राद्ध, कथा श्रवण, आचार्य एवं भागवत पूजन अर्चन एवं यज्ञ कार्य में सम्मिलित होकर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

रंजीत कुमार दीक्षित
श्रीमदभागवत प्रवक्ता-मुख्य प्रतिनिधि
श्री वेद व्यास धाम

संचालक

राम किशोर दीक्षित
9919922869
धर्मेन्द्र श्रीवास्तव
9151817691

कपिल शास्त्री
9936285629

राजेश दीक्षित
7651808973
आशीष त्रिपाठी
9151817692

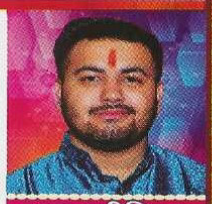

राज दीक्षित
मो0 :- 9119999111

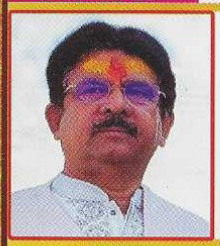

प्रधान यजमान महायज्ञ

परम सौभाग्यशाली श्रीमती सरिता मनोज जोशी, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

महायज्ञ स्थल श्री वेद व्यास धाम

प्रधान कार्यालय

श्री पुष्टिमार्गीय बल्लभ सत्संग समिति (रजि0)

नैमिषारण्य क्षेत्र, सीतापुर (उ.प्र.) भारत, पिन कोड-261402

मो0 :- 9936285629, 9919922869, 9651512727, 9151817691, 9151817692,

ईमेल :- shrivyaspeethadheesh@gmail.com वेबसाइट :- www.naimisharanya.org.in

(यह संस्था आयकर अधि0 1961 की धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है)

शाखा कार्यालय :- श्री वेद व्यास धाम, कांदीवली वेस्ट मुम्बई

श्री पुनीत पंड्या :- 9833013398 श्री संजय दोषी :- 7977231873

शाखा कार्यालय :- श्री वेद व्यास धाम, इन्दौर (म0प्र0)

श्री घनश्याम जी सोमानी
9501106327

कथा व्यास
श्री पवन तिवारी जी (कांटाफोड़ वाले)
8319759008

श्री श्याम सुन्दर जी अटल
9893124010

संयोजकः श्री पुष्टिमार्गीय बल्लभ सत्संग समिति, नैमिषारण्य क्षेत्र

सस्नेह-इस महायज्ञ कार्यक्रम में किसी भी प्रकार का परिवर्तन करने का सर्वाधिकार समिति को होगा जिसकी सूचना आपको तुरन्त भेज दी जायेगी, आपका आगमन व सहयोग प्रार्थनीय है।